ISSN: 2393-8900 IMPACT FACTOR : 1.9152(UIF) VOLUME - 4 | ISSUE - 2 | OCTOBER - 2017

HISTORICITY RESEARCH JOURNAL

'' जन संचार माध्यम और पत्र कारिता ''

प्रा.अनिल मनोहर जाधव
विठ्ठलराव शिंदे कला महाविदयालय टेंभुर्णी
तहसिल माढा, जि. सोलापुर।

प्रास्ताविक :–

पत्रकारिता का सामाजिकता पर योगदान
'' सामाजिकता के लिए पत्रकारिता का योगदान ''
'' पत्रकाकरिता और सामाजिक जीवन ''
(जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता)

आज के आधुनिक युग में जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता अत्यंत, अत्याधिक महत्व प्राप्त हुआ हैं। समाज की प्रगति तथा विकास के लिए इस क्षेत्र का दायित्व अत्यंत महत्वपुर्ण माना जाता हैं। देश गुलामी में था उसके पूर्व भारत स्वाधिनता आन्दोलन को सही दिशा और गती प्राप्त करने का महत्वपूर्ण योगदान है। पत्रकारिता को अनेक उतार-चढाव का सामना करना पड़ा, परन्तु आज के युग में पत्रकारिता के वास्तविकता में बहुत परिवर्तन आर गया है। इसके माध्यमसे समाज की समस्याएँ विश्वबंधुत्व की भावना, सामाजिक बदलाव लाना बड़ा ही कठिण काम है, परन्तु जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता न बहुत बदल कर दिया है।

जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता समाज का आईना है, जिसके कारण समाज में नई सोच, नई दृष्टी नई आशा पल्लवित होती है। इन माध्यमों द्वारा हर बात में गहराई तक पहुँचने का काम किया जाता है। जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता जनता की प्राणवायु ही माना जाता है। जनजागृति का महत्वपूर्ण कार्य इन माध्यामों ने किया है। अतः जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता की समाज की गतिविधियों का आईना माना जाता है, कारण यह दोनों माध्यम हमारे आस-पास तथा समाज मे कब, कहाँ, कैसे, क्या हुआ आदि की सरल सहज सही जानकारी प्रदान करता है।

इस सन्दर्भ में इन्द्रविद्या वाचस्पती ने कहा है – '' पत्रकारिता पाँचवा वेद है जिसके द्वारा हम ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी तथ्यों सामन रखकर अपने मास्तिष्क को खोल दिया है। यह बात सही है कि जिन बातों की हम कभी नही जानते उन्हें पत्रकारिता और जनसंचार के माध्यमद्वारा जान सकते है। पत्रकारिता एवं जनसंचार माध्यम ही समाज के उत्यान-पतन, सत्य-असत्य की स्थितियों को यथावत समाज तक पहुँचाती है।

मानव जानकारी प्राप्त करने के लिए या सुचना प्राप्त करने के लिए किसी न किसी माध्यम का सहारा लेना पडता है। आज के युग में जनसंचार माध्यम एंव पत्रकारिता का कार्य जारी रहा है। जनसंचार में जन का अर्थ है – जनता अर्थात आम आदमी। संचार शब्द मुलतः चर धातु से बना है

बना है जिसका अर्थ है 'चलता' और माध्यम का अर्थ होता है- साधन। अर्थात जनसंसार शब्द का अर्थ होता है - जनता के भावों या विचारों को संम्प्रेषित करनेवाला साधन -

डॉ.यु.सी. गुप्ता के अनुसार - शब्दों में " जिन माध्यमों से हमें विभिन्न तरह की सुचनाएँ, जानकारी आदि की प्राप्ति के साथ मनोरंजन जिसके माध्यमद्वारा होता है, उन्हें जनसंसार माध्यम कहते है।"

पत्रकारिता समाज सेवा का अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। उसको समाज के गतविधियों का दर्पण कहा जाता है। पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में श्रवनतदंसपेउ शब्द प्रचलित है। उसका अर्थ है - दैनिक विवरण। पत्रकारिता मोटे तौर पर प्रतिदिन की घटनाओं का यथातथ्य जानकारी प्रस्तुत करती है।

पत्रकारिता वस्तुतः समाचारों के संकलन, चयन विश्लेषण तथा संप्रेषण की प्रक्रिया है। पत्रकारिता ऐसी विधा है - जिनमें लेखन और संपादन दोनो कार्य आते है।

भारत की पत्रकारिता आधुनिक काल की देन है। आज की पत्रकारिता का स्वरूप व्यापक और बहुआयामी दिखायी देता है। अतः जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता दोनों कार्य विश्व के लिए व्यापक है। जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता एक दुसरे की अनुगामिनी है। आज के युग में मानव जीवन के सभी क्षेत्रों में जनसंचार माध्यम तथा पत्रकारिता का योगदान सराहनीय है। समाज की विविध गतिविधियों का दर्पण याने पत्रकारिता है। प्रारम्भिक काल की और नजर डालते है तो पत्रकारिता तथा जनसंचार का माध्यम सीमित था। वर्तमान युग में पत्रकारिता का क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया है। समाज की सेवा करने का एक महत्वपूर्ण तथा सशक्त माध्यम पत्रकारिता है। नुतन या नित्य घटित होनेवाली अच्छी तथा बुरी घटनाओं को शीघ्र गति के साथ विश्व के कोने-कोने में पहुँचाने का सफल कार्य पत्रकारिता के द्वारा होता है। जनसंचार तथा पत्रकारिता पहले-पहले मुठ्ठीभर लोगों के हाथों में थी, किन्तु आज आम आदमी भी संपादन बन सकता है, मालिक बन सकता है। पत्रकारिता सारे विश्व को जागृत करने का भरकस कार्य करती है।

आज हमें कभी भी नहीं भूलना चाहिए कि, पत्रकारिता का क्षेत्र विश्व व्यापक है, परन्तु उसकी कोई निश्चित एक परिभाषा नहीं की जा सकती है। सच बात यह है कि मानवों जीवन से संबधित घटना तथा परिस्थितियों का चित्रण पत्रकारिता द्वारा ही संभव है। इतना ही नहीं जनमत जागृत करने का, समाज को नई दिशा देने का वास्तविकता समझने के लिए और उसका सही अंकन करनक में पत्रकारिता का विश्वसनीय होना महत्वपूर्ण बन गया हैं।

विश्व की सारी जानकारी को एक गाँव में तब्दिल कर दिया है। आम आदमी को इसी माध्यमों से मनचाही खबरें प्राप्त होती है। इतना ही नहीं समता तथा न्याय से जुड़ा हुआ पेशा पत्रकारिता हैं।

पत्रकारिता का इतिहास जानना चाहते है तो लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। पहले-पहले राजनीती तथा व्यापारियों को उपयोग होता था, परन्तु आज पत्रकारिता का संबंध आम जनता के साथ जुड़ा हुआ है। पत्रकारिता का प्रारंभ अंग्रेजो द्वारा हुआ। आजादी के पहले देशप्रेमी, देशनिष्ठा, देशप्रेम के कारण आम आदमी पत्रकारिता के क्षेत्र में उतर गए। उन्होंने पत्रकारिता का उपयोग जनता में जागृती निर्माण करने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। उनका उद्देश पैसा कमाना या प्रतिष्ठा प्राप्त करना नहीं था, जिस प्रकार आज का उद्देश होता है। पत्रकारिता का कार्य आदर्श तथा मानमर्यादा की सुरक्षा जी जान से करना था।

आजादी के बाद पत्रकारिता ने खुली साँस ही। भारत वर्ष में पत्रकारिता की लंबी यात्रा ने अनेक चढ़ाव-उतार देखें है, परन्तु विपरीत परिस्थितीयों भी भारतीय पत्रकारिता पीछे नहीं हटी यह महत्वपूर्ण बात हैं। इसमें भारतेंदु पूर्व का समय हिंदी पत्रकारिता, भारतेंदु युग द्विवेदी युग, गांधी तथा स्वातोंत्र्योत्तर युग हिंदी पत्रकारिता महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिस से पत्रकारिता सही ढाँचे में हुआ विकास सरहानीय हैं। आज वैश्वकिकरण तथा भूमंडलीकरण के दौर सारा विश्व गुजर रहा है। कौन सा भी विषय उसके लिए वर्जित नहीं है।

आज पत्रकारिता को पॉचवा वेद और प्रजातंत्र का चौथा स्तम्भ माना जाता है। सही घटनाओं का दर्पण पत्रकारिता होती है। जिन में लेखन तथा संपादन का महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है। मानव जीवन जीने के लिए हवा, पानी, भोजन की जरुरत होती है। उसी प्रकार आज के युग में पत्र पत्रिकाओं की

जरुरत पडती है। पत्रकार मुल रुप से सेवा करनेवाला सेवक तथा ज्ञानी शिक्षित होता है। उसके लिए नियम, आचार संहिता बनायी गयी। जिसके कारण गलत काम करने वालों का पर्दाफाश हेा जाता है। अतः उसमें ग्लैमर निर्माण हुआ है। ग्लैमर निर्माण होने के कारण अनेक लोग असकी ओर आकर्षित हो गये है।

पत्रकारिता कई मानदंड माने जाते है। निर्भिकता, ईमानदारी, सटीकता, समता, उत्तरदायित्व और स्वंतत्रता आदि। परंतु आज पत्रकारिता कैसी हो यह बात उसके मालीक पर निर्भर हो रही है। पत्रकारिता का दायित्व क्या है ? समाज को सामाजिक, शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य देने का है। पत्रकारिता की आज की भूमिका बदल रही है इस बदलती सामाजिक भूमिका पर अनेक नए प्रश्न निर्माण हो रहे है ? खडे किए जा रहे है। पत्रकारिता उद्योग से जादा कहीं जनसेवा है यह पत्रकार के लिए ध्यान में रखने की आवश्यकता पडी है।

आज का युग वैज्ञानिक युग है, वैज्ञानिक युग में जनसंचार माध्यमों का महत्व दिन-प्रतिदिन बढता जा रहा है। उसके माध्यम व्दारा जनसेवा करने के साथ-साथ सूचना तथा मनोरंजन की प्राप्ति लोगों में होती है। जनसंचार माध्यम का स्थान मनुष्य को शिक्षित करना, मनुष्य में मानवता पैदा करना महत्वपूर्ण रहा है। जनसंचार माध्यमों स्तर उॅचा हो या गीरा रहा हो, या कितना सही हो या नहीं हो, परंतु उनका कार्य सराहनिय है। आज के युग में जनसंचार माध्यमों ने इतनी गति पकड ली है कि बडे-बडें शहर के साथ देहातों के मन मस्तिक तक पहुँच रहा है। आज के युग में जनसंचार माध्यमों का प्रभाव बढता हुआ दिखायी देता है। जैसे दुरदर्शन रेडियों, इंटरनेट, विज्ञापन, वीडियो कंम्पूटर, फिल्म, डाकतार, प्रणाली, टेलीग्राफ, टेलेक्स, टेलीप्रिंटर, टेलीफोन, इंटरकॉम, कार्डलेस, पेजर, सेल्सूलर फोन, फॅक्स, एस. टी.डी. और आय. एस. डी. आदि जनसंचार माध्यम है. जिसका उपयोग समाज के लिए हो रहा है। परंतु हम कहना चाहते है कि जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता की वास्तविकता जो पहले थी वह आज नही रही है। गरीबी तथा झुग्गी झोपडी के दुःख व्यथा, दर्द, वेदना का अनेक पत्रकारों की लेन देन नही है, यह बहुत बडी दुःख की बात है। क्योंकी आज पत्रकारिता ने व्यावसायिक की ओर कदम बढाया है।

संदर्भ :-

१) जनसंचार एंव पत्रकारिता कल और आज। डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत, रोली बुक डिस्ट्रीव्यूटर्स, कानपुर २०८०२१
२) पत्रकारिता के विविध आयाम। डॉ. गोविंन्द प्रसाद, अनुपम पाण्डे, डिस्कवरी पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली ११०००२
३) पत्रकारिता और समाज। डॉ. यू. सी. गुप्ता, अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस ४८३/२४ प्रहलाद गल्ली, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली - ११०००२
४) जनसंचार माध्यम लेखन कला। डॉ. संतोष गोयल, श्रीनटराज प्रकाशन दिल्ली।